Prof. (Dr.) Sanjay Kumar
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg's Theory of Moral Development)

लॉरेंस कोहलबर्ग (Lawrence Kohlberg) एक प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने बच्चों और वयस्कों में नैतिक विकास (Moral Development) को समझने के लिए एक तीन-स्तरीय (3 Levels) और छह-चरणीय (6 Stages) सिद्धांत प्रस्तुत किया। यह सिद्धांत बताता है कि कैसे व्यक्ति की नैतिक सोच समय के साथ बदलती है — बचपन से वयस्कता तक।

1. पूर्व-परंपरागत स्तर (Pre-conventional Level)

आयु: लगभग 4–10 वर्ष

Stage 1: दंड और आज्ञा चरण (Obedience & Punishment)

सही काम वह है जिससे सजा न मिले। डर के कारण नैतिकता।

– बच्चे नियमों का पालन केवल सजा के डर से करते हैं।

– उदाहरण: "अगर मैं झूठ बोलूंगा तो मुझे डांट पड़ेगी।"

Stage 2: व्यक्तिगत लाभ चरण (Self-Interest)

वही सही जो मेरे फायदे का हो। "अगर मुझे कुछ मिलेगा तो मैं करूंगा।"

– बच्चे सोचते हैं: "अगर मैं यह करूं तो मुझे क्या मिलेगा?"

– नैतिक निर्णय लाभ या इनाम पर आधारित होते हैं।

Edit with WPS Office

2. परंपरागत स्तर (Conventional Level)

आयु: लगभग 10–16 वर्ष

Stage 3: अच्छे पारस्परिक संबंध (Good Interpersonal Relationships)

नैतिकता समाज और संबंधों पर आधारित होती है। दूसरों को खुश करने के लिए अच्छा व्यवहार।

– लोग दूसरों को खुश करने के लिए अच्छा व्यवहार करते हैं।

– "अच्छा बच्चा बनने" की चाहत।

Stage 4: कानून और सामाजिक व्यवस्था का पालन करना (Maintaining Law and Social Order)

कानून और सामाजिक व्यवस्था का पालन करना नैतिकता मानी जाती है।

– कानून, कर्तव्य और सामाजिक व्यवस्था का पालन।

– "नियम सबके लिए हैं" यह भावना।

3. उत्तर-परंपरागत स्तर (Post-conventional Level)

आयु: 16 वर्ष से ऊपर (हर कोई इस स्तर तक नहीं पहुंचता)

Stage 5: सामाजिक अनुबंध (Social Contract)

नियम सामाजिक अनुबंध हैं, जिन्हें बदला जा सकता है यदि वे समाज के हित में न हों।

– व्यक्ति समझता है कि कानून परिवर्तनशील हैं और उन्हें समाज की भलाई के अनुसार बदला जा सकता है।

Stage 6: सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत (Universal Ethical Principles)

आत्मा की आवाज़ और नैतिक सिद्धांत सर्वोच्च होते हैं। मानव अधिकार, समानता आदि सर्वोपरि।

– नैतिक निर्णय आंतरिक सिद्धांतों और आत्मा की आवाज़ पर आधारित होते हैं।

– उदाहरण: गांधीजी का सत्य और अहिंसा का सिद्धांत।

Edit with WPS Office

विशेष बातें (Key Points):

यह सिद्धांत Jean Piaget के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत से प्रेरित है।

कोहलबर्ग ने नैतिक निर्णय के पीछे के तर्क (reasoning) को महत्व दिया, न कि केवल व्यवहार को।

उन्होंने यह भी कहा कि हर कोई Stage 6 तक नहीं पहुंचता।

उदाहरण (Example Case – **Heinz Dilemma**):

कोहलबर्ग ने एक प्रसिद्ध नैतिक कहानी बताई जिसे "Heinz Dilemma" कहते हैं:

हीन्ज की पत्नी गंभीर रूप से बीमार है। एक दवा है जो उसे बचा सकती है, लेकिन वह बहुत महंगी है। हीन्ज के पास पैसे नहीं हैं। क्या वह दवा चुराए या नहीं?

हर स्तर पर व्यक्ति का उत्तर अलग होगा:

Stage 1: नहीं, क्योंकि चुराने पर सजा होगी।

Stage 2: हाँ, अगर पत्नी बची तो मुझे अच्छा लगेगा।

Stage 3: हाँ, एक अच्छा पति अपनी पत्नी की मदद करता है।

Stage 4: नहीं, कानून तोड़ना गलत है।

Stage 5: हाँ, जीवन कानून से ऊपर है।

Stage 6: हाँ, क्योंकि इंसान की जान बचाना नैतिक कर्तव्य है।

निष्कर्ष (Conclusion):

कोहलबर्ग का सिद्धांत दिखाता है कि जैसे-जैसे व्यक्ति का बौद्धिक और सामाजिक विकास होता है, उसकी नैतिक समझ भी बदलती है। यह सिद्धांत शिक्षकों, अभिभावकों और मनोवैज्ञानिकों को बच्चों के नैतिक विकास को समझने और उन्हें सही दिशा देने में मदद करता है।

Edit with WPS Office